आरती श्री गायत्री जी की (१)

आरती श्री गायत्री जी की ।। टेक ।।
ज्ञान को दीप और श्रद्धा की बाती,
सो भक्ति ही पूर्ति करै जहं घी की ।। आरती () ।।
मानस की शुचि थाल के ऊपर,
देवि की जोति जगै जहं नीकी ।। आरती () ।।
शुद्ध मनोरथ के जहां घण्टा,
बाजै, करै पूरी आसहु ही की ।। आरती () ।।
जाके समक्ष हमें तिहु लोक की,
गद्दी मिले तबहु लगे फीकी ।। आरती () ।।
आरति प्रेम सों नेम सों जो करि,
ध्यावहिं मूरति ब्रह्म लली की ।। आरती () ।।
संकट आवै न पास कबैं तिन्हें,
सम्दा और सुख की बन लीकी ।। आरती () ।।

विवरण

श्री गायत्री जी की आरती है । हम अपने ज्ञान रूपी दीपक में अपने भक्ति एवं प्रेम का घी डालकर, तथा अपनी श्रद्धा की बाती जलाकर, आपकी आरती करते हैं । हम अपने शुद्ध एवं स्वच्छ मन रूपी थाल के ऊपर सारे जग में आपकी ज्योति जगाते हैं ।

आपके घण्टे की ध्वनि सुनकर हमारा हृदय प्रफुल्लित हो उठता है । जिनके सामने तीनों लोक हैं और उनके सामने हम हैं, इस अवस्था में हमे दुनिया की कोई भी खुशी मिले, वह फीकी ही जान पड़ती है । जो इस गायत्री जी की आरती प्रेम पूर्वक करता है तथा इनका ध्यान करता है, उसके पास कभी भी
विपत्ति नहीं आता है तथा वह सभी सुखों का अधिकारी हो जाता है ।

visit www.astrogyan.com for more aarthi's, free indian astrology horoscope charts & predictions.
all information © since 2000, Aks Infotech Pvt. Ltd., portal designed & developed by Pintograph Pvt. Ltd.